ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मेधामयासिषम्। सामवेद 171
मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूं।
May I attain superior intellect.

वर्ष 38, अंक 38 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 अगस्त, 2015 से रविवार 9 अगस्त, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

मौन दर्द की वेदना

आखिर उन बेटियों के दर्द को कौन समझेगा?

देश की महान वैदिक सभ्यता में नारी को पूजनीय होने के साथ-साथ 'मां' के पवित्र उद्‌बोधन से संबोधित किया गया है और छोटी बच्चियों को कन्या जैसे शब्दों से सुशोभित कर लोक परम्पराओं, उत्सवों व ग्रह प्रवेश, यज्ञ इत्यादि में इन्हीं छोटी-छोटी बच्चियों को पूजनीय मानकर सबसे पहले भोजन कराया जाता है और मैं ये दावे के साथ कह सकता हूँ कि वैदिक सभ्यता के अलावा दूसरी कोई भी संस्कृति या सभ्यता नारी के किसी भी रूप को इतना मान नहीं देती जितना कि वैदिक आर्य संस्कृति देती है। किन्तु हम जब इस संस्कृति पर हमला होते देखते हैं तब मन की पीड़ा विरोधी बनकर समाज को जगाने के लिए बेचैन हो उठती है।

विगत महीने प्रधानमंत्री जी ने जब बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का नारा दिया तो मन बड़ा प्रफुल्लित हुआ कि चलो आर्य समाज की आवाज में किसी ने तो स्वर से स्वर मिलाया। किन्तु कुछ दिन पीछे जब ये खबर पढ़ी कि अभद्रता के चलते उत्तर प्रदेश में लगभग चार सौ बच्चियों ने स्कूल जाना बंद कर दिया, तो मन द्रवित हो उठा।

आमतौर पर ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी बच्चियों को विरोध करना नहीं सिखाया जाता, जिस कारण वे अपने साथ होते गलत व्यवहार पर चुप रह जाती हैं और मानसिक व शारीरिक यातना का शिकार होती रहती हैं, यदि कोई विरोध करती हैं तो उसके घर वाले समाज के डर से उसे चुप कर देते हैं। जबकि स्वामी दयानन्द सरस्वती हमेशा नारी को आत्मनिर्भर बनाने की वकालत करते थे और आज आर्य समाज स्वामी जी के सपनों को पूरा करने के लिये कन्या गुरुकुलों के माध्यमों से नारी को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा दे रहा है।

बात कुछ यूं है कि उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के एक गांव की कुछ बच्चियां नदी पार कर स्कूल जाती हैं जब नाव नहीं होती तो मासूम अबोध बच्चियां तख्तों के सहारे नदी को पार करती हैं उसी समय कुछ आवारा लड़के नदी में नहाते हुए अश्लील हरकतें व भद्दे इशारे कर इन्हें गालियां तक देते, लेकिन जब इन बच्चियों ने इसका विरोध किया तो वे दरिंदे इन बच्चियों के साथ मार-पीट पर उतर आते जिसके चलते डरी-सहमी मासूम बच्चियों ने स्कूल जाना ही बंद कर दिया, एक तो गरमी-बरसात में अपने भारी भरकम बस्ते बचाते हुए नदी पार कर स्कूल जाना, दूसरा रोज छेड़खानी का शिकार होना और बच्चियां भी इतनी छोटी कि वो ठीक ढंग से बता भी नहीं पा रही हैं अंदाजा लगाना कठिन है कि छेडछाड़ की हरकत कैसी होगी क्योंकि खुद पुलिस अधिकारी भी बताने में शर्म महसूस कर रहे हैं अक्सर कुछ ऐसे ही कारणों से लड़कियां स्कूल जाना बंद कर देती हैं या परिवार के लोग ही उन्हें जाने नहीं देते। लेकिन सबसे बड़ी बात इस मामले में ये देखने को मिली कि महिला आयोग

...शेष पेज 2 पर

पुरुषार्थ चतुष्टय

शास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को पुरुषार्थ चतुष्टय कहा गया है। सृष्टि में विकास की दिशा प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर तथा भोग से त्याग की ओर है। इसी भावना को मूर्त रूप देने के लिए धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की परिकल्पना की गई है। 'अर्थ' और 'काम' का नियामक धर्म है अर्थात् धर्मपूर्वक अर्थोपार्जन तथा 'काम' के उपयोग का फल मोक्ष है। 'अर्थ' और 'काम' को सन्तुलित अवस्था में रखने के लिए धर्म की आवश्यकता है।

वैदिक संस्कृति में पुरुषार्थ का आशय है- पुरुष का प्रयोजन अर्थात् मनुष्य के जीवन मूल्य। शास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को पुरुषार्थ चतुष्टय कहा गया है। सृष्टि में विकास की दिशा प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर तथा भोग से त्याग की ओर है। इसी भावना को मूर्त रूप देने के लिए धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की परिकल्पना की गई है। 'अर्थ' और 'काम' का नियामक धर्म है। अर्थात् धर्मपूर्वक अर्थोपार्जन तथा 'काम' के उपयोग का फल मोक्ष है। 'अर्थ' और 'काम' को सन्तुलित अवस्था में रखने के लिए धर्म की आवश्यकता है। महाभारत में आदि पर्व में युधिष्ठिर के पूछने पर मंत्री कणिक ने कहा,''धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किन्न सेव्यते'' अर्थात् 'अर्थ' और 'काम' की सिद्धि धर्म से ही हो सकती है। महाभारत में एक प्रसिद्ध उक्ति है, ''मै। बांह उठाकर उच्च स्वर में कह रहा हूं किन्तु कोई सुनता नहीं। धर्म से ही अर्थ और काम की प्राप्ति होती है। उस धर्म का सेवन क्यों नहीं करते?''

जीवन का वही मार्ग सुख देने वाला है जिससे मनुष्य संसार को भोगता हुआ भी उस में लिप्त न हो। ''एवंयि नान्यथे तोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।'' अर्थात् निर्लेप व निष्काम भाव से संसार में रहना यही तो जीवन का सच्चा मार्ग है।भौतिक वाद में उन्नति का अर्थ प्रकृति पर विजय पाना है किन्तु आध्यात्मवाद के अनुसार उन्नति का अर्थ आत्मा पर विजय पाना है। वैदिक संस्कृति में भौतिकवाद व आध्यात्मवाद; प्रवृत्ति व निवृत्ति, एवं प्रेय व श्रेय का समन्वय है। धर्म-आध्यात्मवाद, निवृत्ति त्याग तथा श्रेय का प्रतिनिधित्व करता है किन्तु अर्थ व काम - भौतिक वाद, प्रवृत्ति, प्रेय तथा भोग का प्रतिनिधित्व करते हैं। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ व संन्यास आश्रम धर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु, गृहस्थ आश्रम अर्थ और काम का प्रतिनिधित्व करता है।

धर्म :- धर्म का दो दृष्टियों से विचार किया जा सकता है -

1. विचारात्मक 2. क्रियात्मक।

विचारात्मक दृष्टिकोण को दार्शनिक दृष्टिकोण भी कह सकते हैं, जिसका विषय ईश्वर,

...शेष पेज 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के तत्वावधान में

68वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर

अमर शहीद करतार सिंह सराभा बलिदान शताब्दी वर्ष के अवसर पर

यज्ञ एवं देशभक्ति भजन संध्या

आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी, दिल्ली दिनांक 14 अगस्त 2015 सायं 4 बजे से 7 बजे तक

सभी देश भक्त आर्यजन अपने परिवार व ईष्ट-मित्रों सहित उपस्थित हो देश भक्ति गीतों का आनन्द प्राप्त करें

निवेदक :

धर्म पाल आर्य	विनय आर्य	विद्यामित्र ठुकराल	कीर्ति शर्मा	वागीश शर्मा	आदर्श कुमार	रणधीर आर्य	एस.पी. सिंह	देवेन्द्र आर्य
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक	सह संयोजक	सह संयोजक	सहसंयोजक	सहसंयोजक	सहसंयोजक

सहयोगी आर्य समाजें : आर्य समाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा, डोरीवालान, किशनगंज, करोल बाग, प्रताप नगर, पुलबंगश, आर्यपुरा, केशवपुरम्, मुल्तान देव नगर।

सम्पादकीय

बिना तर्क की बहस

याकूब तो दफन हो गया पर कुछ प्रश्न अभी भी जिन्दा हैं। लिखने से पहले एक बात स्पष्ट कर देता हूँ कि मुझे इस्लाम से कोई नफरत नहीं। बस देश के प्रति वफादार हो, हिन्दू हो, बौद्ध हो, सिख हो चाहे कुछ भी हो, बस वह देश के लिये गद्दार न हो। हम सब रोज देखते- सुनते हैं कि कश्मीर में पाकिस्तान के झंडे व आई, एस, आई, एस के झंडे भारत मुर्दाबाद के नारों के साथ फहराये जाते हैं। देश के संविधान को गाली दी जाती है। ऐसा नहीं कि बगदादी इन लोगों को ये झंडे दे गया और ये सब सिखा गया कि आप लोग इन झंडों को फहराओ और नारे लगाओ। बल्कि सत्य ये है कि हमारे देश के अन्दर ही कुछ आतंक के रहनुमा बसते हैं। जो अपनी राजनैतिक रोटियां सेंकने को इन भोले-भाले लोगों से इस तरीके के काम कराते हैं। इनमें से कुछ लोग तो याकूब की फांसी मामले में खुलकर सामने भी आ गये जिसमें कुछ मीडिया से बार-बार यह पूछ रहे थे क्या सभ्य समाज में फांसी देना जरूरी है। मेरा उन लोगों से प्रश्न है 'क्या सभ्य समाज में बम विस्फोट जरूरी है? क्या सभ्य समाज में मासूम लोगों की हत्या करना जरूरी है?' एक तो यह प्रश्न समाज और सरकार दोनों के लिये ही विचारणीय बन जाता है, कि ये लोग खुलकर न्यायालय और संविधान पर प्रश्नचिह्न क्यों लगा रहे हैं?

दूसरा यह है कि जब आतंक का रूप इतना घिनौना है तो उसकी कोख कैसी होगी! जहां से ये मानवता के हत्यारे पैदा होते हैं। इसका एक सीधा सा जबाब है कि आप पाकिस्तान के मदरसों/ स्कूलों में जाएं वहां के 5वीं से लेकर 12वीं जमात तक के पाठयक्रम में किस प्रकार भारत विरोधी और हिन्दू विरोधी शिक्षा दी जाती है उसे देखें। उसे देख कर शायद उन लोगों को शर्म आये जो भारत में 'ग' से गणेश लिखे जाने पर कोर्ट में इसलिए गये थे कि इससे देश की धर्मनिरपेक्षता खतरे में आ जाएगी! पर पाकिस्तान में मजहबी शिक्षा का जो स्वरूप है, उसे पढ़कर शयद उन मासूमों का भविष्य खतरे में आ जाये उनके पाठयक्रम में लिखा है 8वीं सदी में सिंध प्रांत में दो हिन्दू औरतों की चीखें सुनकर मोहम्मद बिन कासिम उन्हें आजाद कराने पाकिस्तान आया और उसने देखा समूचे भारत में हिन्दू नारियों की स्थिति बद से बदतर है, जिनकी आजादी की लड़ाई के लिये वो आगे बढ़ता गया (यद्यपि हम यहां एक बात बता दें सब जानते हैं मोहम्मद बिन कासिम राजा दाहिर की पुत्रियां उरला देवी और विरला देवी को उठाकर ले गया था) खैर। आगे लिखा है 13वीं सदी आते-आते पाकिस्तान बंगाल तक फैल चुका था और 16वीं सदी में हिन्दुस्तान नक्शे से गायब हो गया था और औरंगजेब के जमाने में तो पाकिस्तान पूरे विश्व में छा गया था लेकिन 17 वीं सदी में हिन्दुओं ने अपनी रक्षा के लिये अंग्रेजों को बुला लिया और पाकिस्तान को छोटे से भू-भाग में समेट दिया और हमारे कुछ भाई कश्मीर में रह गये जो अपनी आजादी की लड़ाई के लिये लड़ रहे हैं जब ये तामील पाक बच्चों को मिलेगी। तो वे क्या बनेंगे आतंकी या इंजीनियर?

हालांकि पाकिस्तान के पत्रकार निजाम सेठी यह कहते हैं कि पाकिस्तान शब्द का जन्म ही 1940 में हुआ था। खैर बात यह है कि भारत तक आते-आते ये मजहबी तामील आतंक बन जाती है जिसका लाभ तो कुछेक राष्ट्रद्रोही ले पाते हैं किन्तु हानि सैकड़ों बेगुनाहों को भुगतनी पड़ती है। कश्मीर के हालात 1947 से लेकर आज तक एक जैसे हैं भारत में प्रधानमंत्री बदलते रहे पर कश्मीर पर नीतियां कभी नहीं बदलीं।

हालाकि हम राजनैतिक लड़ाई और राजनीति से दूर ही रहते हैं किन्तु जब राजनीति धर्म के मार्ग में बाधक बने तो धर्म क्या करें। तब धर्म की भी राजनीति पर हमला बोलना मजबूरी हो जाती है। 1989-1990 के दौर में जब कश्मीरी पंडितों के धर्म पर हमला बोलकर उन्हें वहां से विस्थापित किया गया यदि तब राजनीति मौन रहने की बजाय शोर करती तो आज कश्मीर में आई. एस के झंडों की जगह तिरंगे लहरा रहे होते और ये कटु सत्य है। विदुर नीति कहती है यदि आप शान्ति चाहते हैं तो एक बार चीखों के शोर का सामना करना पड़ेगा पर मैं लौटकर वापस अपने उसी प्रश्न पर आता हूँ याकूब कौन था, एक आतंकी? 'पर जनाजा देखकर तो लग रहा था जैसे किसी नबी का जनाजा हो, अल्लाह ओ अकबर से गूंजते नारे बता रहे थे कि सीमापार में पली मजहबी मानसिकता, वहां पढ़ाये गये इतिहास का असर यहां की हवाओं में फैल रहा है जिसे अंग्रेजी हुकूमत में देशद्रोह और आजाद भारत में धर्मनिरपेक्षता कहते हैं । अल्पसंख्यक बताकर या मासूम कहकर जनाजे के पीछे चलने वाले लोग क्या ये भूल गये थे कि गुरुदासपुर आतंकी हमले में एस. पी. बलजीत सिंह समेत सात सिख अल्पसंख्यकों की अर्थी भी उठी थी। इनके प्रति इनकी संवेदना क्यों सो गयी थी? और यदि इस्लाम ही अल्पसंख्यक है तो जनाजा तो उस दिन महान देशभक्त पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का भी उठा था वह भी अल्पसंख्यक समुदाय से ही थे। उसके प्रति इनकी संवेदना कहां चली गयी थी? अब भारत सरकार को तय करना है यह धर्मनिरपेक्षता है, या आतंक की प्रत्यक्ष रूप से पैरवी? फैसला सरकार के हाथ में है, यदि सरकार ने फैसला लेने में देर कर दी तो मजबूर होकर कहना पड़ेगा 'जब चुग गई चिड़ियां खेत तब पछताए होत क्या?'

पर हमेशा की तरह आतंक के मुददे पर संसद फिर बिखर जायेगी और शून्य के आकार में बनी संसद से नतीजा शून्य ही आयेगा। ***-सम्पादक***

स्वाध्याय

सरस्वती-माता-ज्ञानदेवी बड़े भारी ज्ञान-समुद्र को प्रकाशित करती है

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना। धियो विश्वा वि राजति।। -ऋ॰ 1/3/12

ऋषिः- **मधुच्छन्दाः ।।** देवता- **सरस्वती।।** छन्दः- **गायत्री।।**

शब्दार्थ- सरस्वती- ज्ञानदेवी **केतुना**- ज्ञान द्वारा, प्रज्ञापक शक्ति द्वारा **महः अर्णः**- बड़े भारी ज्ञान-समुद्र को **प्रचेतयति**-प्रकाशित करती है और **विश्वा धियः**-सब प्रकाशित बुद्धियों को **विराजति**-विशेषतया दीप्त करती है।

विनय- ज्ञान की सच्ची जिज्ञासा होते ही यह अनुभव होने लगता है कि अरे, संसार में तो बड़ा ज्ञातव्य है। एक से एक अद्भुत विद्या है। जिस विषय में देखो उसी विषय में ज्ञान पाने का इतना क्षेत्र है कि मनुष्य कई जन्मों में भी उसका पार नहीं पा सकता। तब दीखता है कि मनुष्य के सामने न जाने हुए ज्ञान का एक अनन्त समुद्र भरा पड़ा है। यह देखने वाले मनुष्य नम्र हो जाते हैं, उन्हें ज्ञान का अभिमान नहीं रहता। ऐसे ही मनुष्य सरस्वती देवी की शरण में जाते हैं। सरस्वती देवी के झण्डे के नीचे आने वालों को सबसे पहले तो यही पता लगा करता है कि ज्ञेय अनन्त है, हमारे ज्ञातव्य संसार का पार नहीं है और हम तुच्छ लोग तो अपनी क्षुद्र इन्द्रियों और बुद्धि को लिये हुए इसके एक किनारे खड़े हैं। विद्यादेवी पहले तो इस बड़े भारी समुद्र को ही हमारे लिए प्रकाशित करती हैं, इसके पार तो पीछे पहुंचाती हैं। पहले हमें यह अनुभव होना चाहिए कि ज्ञेय अनन्त है। ज्ञान की अनन्तता तो हमें पीछे दीखेगी। सरस्वती देवी जिधर-जिधर अपने ''केतु'' को-अपने झण्डे को ले-जाती है, अर्थात् जिधर-जिधर अपनी प्रज्ञापक शक्ति को फिराती है, वहां-वहां पता लगता जाता है कि अरे, यह भी एक बड़ा उत्तम ज्ञेय-क्षेत्र है, यह भी एक बड़ा भारी ज्ञेय-क्षेत्र है। एवं हरेक क्षेत्र को हमारे लिए जगाती जाती है और फिर सब बुद्धियों को विशेष रूप से दीप्त भी करती जाती है, अर्थात् जिस-जिस वस्तु की गहराई में जाकर हम जानना चाहते हैं, उस-उस वस्तु के तत्त्व को, उसके सच्चे स्वरूप को भी हमारे लिए चमका देती है। तब हम जिस विषयक बुद्धि पाना चाहें उसी विषय के ज्ञान को यह देवी हमारे लिए प्रदीप्त कर देती है। तभी अनुभव होता है कि सभी बुद्धियों में वही देवी प्रदीप्त हो रही है, वही चमक रही है, सर्वत्र उसी का राज्य है। सरस्वती देवी के सच्चे स्वरूप का या ज्ञान के आनन्त्य का (जिसके सामने ज्ञेय कुछ भी नहीं होता) अनुभव उसी अवस्था में पहुंचने पर होता है।

साभार-वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

- विजय आर्य

मो. 09540040339

पृष्ठ 1 का शेष

मौन दर्द ...

की उपाध्यक्षा ही उल्टा बच्चियों को डाटने लगीं लेकिन लड़कियां खमोश हैं कि आखिर माजरा क्या है वे इस छेड़छाड़ का शिकार क्यों हो रहीं हैं? यदि हम इस व्यवहार को पशुवत व्यवहार कहें तो शायद पशु का भी अपमान होगा क्योंकि ऐसी शर्मनाक हरकतें तो पशु भी नहीं करते। आखिर मनुष्य के रूप ये दरिंदे हैं कौन जो प्रशासन इन्हें बचाने में लगा हुआ है! बस इतना कि वे एक विशेष सम्प्रदाय से ताल्लुक रखते हैं।

जो उत्तर प्रदेश सरकार आसाराम के गवाह की मौत होने पर सीबीआई जांच के आदेश तक दे देती है वो इस मामले पर चुप्पी साधे क्यों बैठी है? और जब स्थानीय साधू-संतों ने इस मामले के खिलाफ आवाज उठाई तो इसी उत्तर प्रदेश सरकार के आला अधिकारियों ने धारा 144 लगा दी? हमें इस मामले में संवेदना नहीं विरोध करना चाहिये क्योंकि मामला मासूम बेटियों का है।

मेरा आह्वान समस्त महिला समाज और प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी से है कि इस मामले को सार्वजनिक मंचों पर उठाकर उन बच्चियों को न्याय दिलवाया जाना चाहिए। भारत के राजनेता और अभिनेता एक आतंकी को मासूम कहकर उसे बचाने के लिये राष्ट्रपति को ज्ञापन सैंपने निकल पड़ते हैं किन्तु जब कोई ऐसा संवेदनशील मामला आता है तो ये मौन क्यों हो जाते हैं क्या वह आतंकवादी याकूब मैनन इन बच्चियों से भी ज्यादा मासूम है जो सरकार इस पर कार्यवाही करने के वजाए मौन धारण करना ज्यादा पसंद करती है। आमतौर पर ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी बच्चियों को विरोध करना नहीं सिखाया जाता, जिस कारण वे अपने साथ होते गलत व्यवहार पर चुप रह जाती हैं और मानसिक व शारीरिक यातना का शिकार होती रहती हैं, यदि कोई विरोध करती भी है तो उसके घर वाले समाज के डर से उसे चुप करा देते हैं। जबकि स्वामी दयानन्द सरस्वती हमेशा नारी को आत्मनिर्भर बनाने की वकालत करते थे और आज आर्य समाज स्वामी जी के सपनों को पूरा करने के लिये कन्या गुरुकुलों के माध्यमों से नारी को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा दे रहा है सिर्फ इतना ही नहीं आर्य समाज ग्रामीण क्षेत्रों में भी आर्य वीरांगनाओं को विभिन्न शिविरों के जरिए जूड़ों-कराटे, तलवार बाजी, भाला फेंक, योगा इत्यादि के प्रशिक्षण देकर उनको आत्म रक्षा के योग्य बना रहा है।

-राजीव चौधरी

'सृष्टि के रहस्यों के ज्ञान का सरलतम उपाय सत्यार्थ-प्रकाश का अध्ययन

आज देश में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न वेदों के इतने विद्वान नहीं हैं जितने आर्यसमाज द्वारा स्थापित गुरुकुलों में शिक्षित सभी वर्णों के लोग हैं। महर्षि दयानन्द के बाद जितने भी वेदों के भाष्यकार अद्यावधि हुए हैं वह सभी आर्यसमाज के गुरुकुलों आदि से देश को प्राप्त हुए हैं एवं इनमें हमारे शूद्र कुलोत्पन्न विद्वान बन्धु भी हैं जिन्हें पण्डित जी कह कर आदर दिया जाता है। महर्षि दयानन्द की यह भी एक महान देन है। यह ईश्वर, वेद और महर्षि दयानन्द द्वारा प्रचारित सिद्धान्तों की सबसे बड़ी विजय भी है। ***-सम्पादक***

मनुष्य को ईश्वर ने जो मानव शरीर दिया है वह पांच ज्ञान इन्द्रिय, पांच कर्म इन्द्रिय, मन व बुद्धि सहित अनेक अंगों व उपांगों से युक्त है। बुद्धि व मन दो ऐसे अवयव हैं जो अपना-अपना कार्य करते हैं, अन्य सब भी स्वत: करते हैं। मन आत्मा के संस्कारों, प्रवृत्तियों व ज्ञान के अनुरुप इन्द्रियों को अपने-अपने कार्यों में प्रवृत्त रखता है एवं संकल्प-विकल्प भी करता है तथा बुद्धि चिन्तन व मनन सहित ऊहापोह व सत्यासत्य का निर्णय करती है। साक्षर व सांसारिक ज्ञान से युक्त मनुष्य के सामने समय-समय पर कई प्रश्न आते हैं जिनका उत्तर उसके पास नहीं होता। विज्ञान में भी कई प्रश्नों के उत्तर नहीं है। हमारे व अन्य मतों के धार्मिक विद्वान भी अनेक प्रश्नों का समाधान करने में असमर्थ हैं। इस कारण अनेक मनुष्य प्रश्नों का समाधान न मिलने के कारण मन में आये प्रश्नों की उपेक्षा कर देते हैं। महर्षि दयानन्द के सम्मुख उनकी युवावस्था व बाद के समय में भी यह प्रश्न आये थे और उन्होंने इनका रहस्य व यथार्थ जानने के लिए ही अपना घर, माता-पिता व कुटुम्बियों का त्याग कर धर्म व सत्य के अनुसंधान का मार्ग अपनाया था। उन्होंने अपने प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए धार्मिक पुरुषों यथा सन्त, महात्माओं, योगियों, विद्वानों, साधकों आदि की संगति कर उनसे जो भी ज्ञान प्राप्त हो सकता था, उसे प्राप्त कर उसका विश्लेषण एवं अन्वेषण किया और सत्य को ग्रहण तथा असत्य का त्याग किया। उनका सारा जीवन ही सत्य के अनुसंधान व सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग का अपूर्व उदाहरण है। महर्षि दयानन्द का माता पिता द्वारा दिया गया नाम मूलशंकर था। उन्होंने युवावस्था में ही संन्यास ले लिया था जिससे कि वह अपना सारा समय सत्य के अनुसंधान में लगा सकें। धार्मिक जगत में सत्यानुसंधान के लिए समस्त धार्मिक साहित्य का अध्ययन, ऊहापोह, चिन्तन, मनन, संगतिकरण, तर्क व बुद्धि की कसौटी पर उसे जांचना व परखना, वह ज्ञान सृष्टि क्रम के अनुकूल भी होना आवश्यक होता है अन्यथा वह कोरा अन्धविश्वास व अविद्या कहलाता है। एक बात और भी महत्त्वपूर्ण है कि केवल सभी उपलब्ध व खोजपरक प्राप्त ग्रन्थों का अध्ययन करने व विद्वान साधु-संन्यासियों की संगति से ही काम नहीं चलता अपितु सत्यानुसंधान के लिए साधक व अन्वेषक का सिद्ध योगी होना भी आवश्यक होता है। यदि मनुष्य सिद्ध योगी नहीं होगा तो बहुत से सूक्ष्म विषयों पर वह दुविधा व भ्रान्तियों से ग्रस्त हो सकता है जैसा कि प्राय: अद्यावधि होता आ रहा है। महर्षि दयानन्द में यह सभी योग्यतायें अपनी शिखर की स्थिति को प्राप्त थीं। उन्होंने अनेक योगियों की संगति कर उनसे योग सम्बंधी ज्ञान व क्रियाओं को सीखा था व उसका अपनी मृत्यु पर्यन्त अभ्यास करते रहे। यद्यपि वह संस्कृत भाषा जानते थे और उन्होंने सहस्रों ग्रन्थ ढूंढ-ढूंढ कर पढ़े भी थे, परन्तु उन्हें जो ज्ञान प्राप्त हुआ था उससे वह सन्तुष्ट नहीं थे। वह एक ऐसे गुरु की तलाश में थे जो संसार व ईश्वर आदि विषयों से संबंधित सत्य व यथार्थ ज्ञान से पूर्ण हो और वह उनको शिष्य स्वीकार कर समस्त विद्यायें व ज्ञान उन्हें प्रदान कर दे। वह अपनी इस उत्कण्ठा के समाधान में सफल हुए और उन्हें आर्ष ज्ञान व वेदों से परिपूर्ण एक योगी संन्यासी प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती का शिष्यत्व प्राप्त हुआ जिनसे उन्होंने वेदों के आर्ष व्याकरण सहित संसार व आर्ष ज्ञान के सभी रहस्यों का निवारण व समाधान तीन वर्षों में प्राप्त किया।

महर्षि दयानन्द ने सन् 1863 में गुरु विरजानन्द जी से अध्ययन पूरा किया था। उन दिनों देश न केवल परतन्त्र था अपितु धार्मिक अन्धविश्वास, अज्ञान, कुरीतियां, सामाजिक विषमतायें आदि अपनी चरम सीमा पर थीं। स्त्रियों व शूद्रों को वेदों के अध्ययन का अधिकार नहीं था। स्थिति यह थी कि शूद्र शब्द का यथार्थ अर्थ ही हमारे समाज के ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य भूल चुके थे और निर्दोष जन्मना शूद्र जाति के बन्धुओं पर अमानवीय अत्याचार करते थे। देश की परतन्त्रता का मुख्य कारण भी वेदों का अप्रचार, अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां जिसमें मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, बाल विवाह, मृतक श्राद्ध व सामाजिक असमानता आदि ही प्रमुख थीं। गुरु की आज्ञा व प्रेरणा से महर्षि दयानन्द ने अपने वेदों के ज्ञान के बल पर सभी अविद्याग्रस्त मतों को खुली चुनौती दी और उनसे शास्त्रार्थ कर वैदिक मत को पुष्ट व सत्य सिद्ध किया। ऐसा कोई आध्यात्मिक धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक प्रश्न नहीं था जिसका उन्होंने समाधान न किया हो। उनकी अनेक देनों में से एक देन यह भी है कि उन्होंने ईश्वर को इस सृष्टि का रचयिता सिद्ध किया है। चार वेदों को उसी ईश्वर द्वारा आदि चार पवित्रात्मा; ऋषियों को उनकी हृदय गुहाओं में प्रेरणा द्वारा दिया गया ज्ञान सिद्ध किया है। उन्होंने स्त्री, शूद्रों, क्षत्रिय और वैश्य ही नहीं अपितु मनुष्यमात्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिया, जो ईश्वर प्रदत्त है, और इस विषय में यजुर्वेद के अध्याय 26 के दूसरे मन्त्र 2

'यथेमां वाचं कल्याणीमवदानी जनेभ्य:। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।' को प्रस्तुत कर सभी पण्डितों की बोलती बन्द कर दी। देश में इतना अज्ञान था कि महाभारत काल के बाद पांच हजार वर्षों तक किसी धार्मिक विद्वान व महापुरुष का ध्यान इस वेद मन्त्र पर गया ही नहीं था। महान आश्चर्य? इसका परिणाम यह हुआ कि क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र कुलों के पुरुषों एवं कन्याओं ने भी वेदाध्ययन किया और वह सभी वेदों के उच्चकोटि के विद्वान बने। यह एक तथ्य है कि आज देश में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न वेदों के इतने विद्वान नहीं हैं जितने आर्यसमाज द्वारा स्थापित गुरुकुलों में शिक्षित सभी वर्णों के लोग हैं। महर्षि दयानन्द के बाद जितने भी वेदों के भाष्यकार अद्यावधि हुए हैं वह सभी आर्यसमाज के गुरुकुलों आदि से देश को प्राप्त हुए हैं एवं इनमें हमारे शूद्र कुलोत्पन्न विद्वान बन्धु भी हैं जिन्हें पण्डित जी कह कर आदर दिया जाता है। महर्षि दयानन्द की यह भी एक महान देन है। यह ईश्वर, वेद और महर्षि दयानन्द द्वारा प्रचारित सिद्धान्तों की सबसे बड़ी विजय भी है। महर्षि दयानन्द (1824-1883) ने अपने समय में सारे देश में घूम-घूम कर वेदों व वैदिक मान्यताओं का प्रचार व प्रसार किया। लोगों के आग्रह पर उन्होंने वैदिक मान्यताओं व अन्धविश्वासों आदि का बोध कराते हुए एक निर्णयात्मक धार्मिक ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा, जिसमें सभी वैदिक मान्यताओं का पोषण होने के साथ मत-मतान्तरों की अवैज्ञानिक व अज्ञानतापूर्ण मान्यताओं का प्रबल तर्कों व प्रमाणों से खण्डन भी किया है। इस धर्म ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द ने मनुष्य के मन में उठने वाले प्राय: सभी प्रश्नों व शंकाओं के युक्ति, तर्क, शास्त्र व अनुसंधान से पूर्ण सत्य व यथार्थ उत्तर दिये हैं। उनकी प्रत्येक मान्यता ज्ञान व विज्ञान की कसौटी पर सत्य व अकाट्य है। यही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसका संसार के प्रत्येक मनुष्य कहलाने वाले व्यक्ति को निष्पक्ष भाव से अध्ययन करना चाहिये। शाश्वत सत्य ज्ञान से पूर्ण होने के कारण इस ग्रन्थ से साम्प्रदायिकता समाप्त होकर समाज में बन्धुत्व की भावना का विकास होगा। महर्षि दयानन्द की कुछ मान्यताओं का यहां परिचय भी करा देते हैं। उनके अनुसार ईश्वर एक है जो सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अमर, अनन्त, अभय, कर्मफल प्रदाता, मुक्तिदाता, कर्मानुसार जन्म देने वाला, सृष्टि की रचना, पालन व प्रलय करने वाला है। जीवात्मा एक सत्य स्वरूप, चेतनतत्व, एकदेशी, निराकार, अनादि, अजन्मा, अविनाशी, अमर, कर्म-फल चक्र में बन्धा हुआ, विवेक को प्राप्त कर मुक्ति का लाभ करने वाली, ससीम व अल्पज्ञ सत्ता है। इसी प्रकार से प्रकृति सत्य स्वरूप, जड़ पदार्थ, सत्व-रज-तम गुणों वाली, अजन्मा व अनादि है। इस सूक्ष्म प्रकृति को ही परमात्मा सृष्टि के आरम्भ में रच कर इस ब्रह्माण्ड को बनाता है। सभी मनुष्यों के लिए अपने माता-पिता व आचार्य पूज्य होते हैं। सभी मनुष्य को नित्यप्रति सन्ध्या व हवन के साथ पितृयज्ञ, बलिवैश्व देवयज्ञ तथा अतिथियज्ञ करना आवश्यक है अन्यथा वह ईश्वर व समाज के प्रति कृतघ्न होते हैं। वेदाध्ययन से सभी शंकाओं व मिथ्या विश्वासों का शमन व दमन होकर मनुष्य सत्य को जान पाता है। सृष्टि की आदि में बड़ी संख्या में ईश्वर ने मनुष्यों को पृथ्वी व भूमि रूपी माता के गर्भ से उत्पन्न किया था। वैदिक संस्कृत अलौकिक व ईश्वरीय भाषा है। संसार के सभी मनुष्यों के आदि पूर्वज भारत के तिब्बत नामी स्थान पर सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुए थे। आदि काल में कोई वर्ण व्यवस्था न होने के कारण सभी ब्राह्मण थे। वर्ण व्यवस्था बाद में अस्तित्व में आई है। यदि वर्ण व्यवस्था जन्मना होती तो संसार में सभी ब्राह्मण होते, अन्य कोई वर्ण होता ही नहीं। वेदों के अनुसार विवाह पूर्ण युवावस्था में होना चाहिये। बाल विवाह, वृद्धों का विवाह व बेमेल विवाह वेद विरुद्ध है। इसी प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करने से मनुष्यों की सभी शंकाओं का निराकरण हो जाता है जो अन्य किसी मत के साहित्य व ग्रन्थ को पढ़कर नहीं होता। यह भी बता दें कि जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था, छुआछूत, ऊंचनीच की बातें वेद विरुद्ध होने से पापाचरण है जिनके फल जन्म-जन्मान्तर में मनुष्यों को अवश्यमेव भोगने होंगे।

-मनमोहन कुमार आर्य

आर्य समाज प्रीत बिहार में आयोजित अंतर्विद्यालयीय मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता सम्पन्न

अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं से आर्य प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का निरन्तर अवसर मिले- सुरेन्द्र रैली

विद्यार्थी वेद मंत्रों को जीवन में अपनाएं –उषा किरण आर्या

''जिस दिन वेद मंत्रों से धरती को सजाया जाएगा, उस दिन ऋषि के गीतों का त्योहार मनाया जाएगा'' इन पंक्तियों को आर्य विद्यालयों के विद्यार्थियों ने सार्थक कर दिया। यह अवसर था, आर्य समाज प्रीतविहार के प्रांगण में आयोजित अंतर्विद्यालयीय मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता का। वेद मंत्रों के सुन्दर ढंग से आर्य विद्यार्थियों ने पाठ किया। यह आयोजन किसी उत्सव से कम प्रतीत नहीं हो रहा था। पांच वर्गों में विभाजित इस प्रतियोगिता में वेद मंत्रों (गायत्री मंत्र, ईश्वर स्तुति, उपासना मंत्र, संगठन सूक्त, स्वस्तिवाचन मंत्र व शांति प्रकरणम् मंत्र) ने वातावरण को गुंजायमान किया।

इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र रैली, श्रीमती उषा किरण आर्या, श्रीमती वीणा आर्या, श्री ईश नारंग, श्री रवि सेठी, श्री कीर्तिराज दीवान व विभिन्न विद्यालयों की अध्यापिकाएं, आर्य वैदिक पाठशाला, प्रीत विहार की सभी अध्यापिकाएं, प्रेम आर्य और रवि आर्य उपस्थित थे। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र व कॉमिक्स और विजेताओं को मैडल दिये गये। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। - **आर्य विद्या परिषद**

अंतर्विद्यालयीय खेल प्रतियोगिताओं के लिए आवश्यक बैठक

अंतर्विद्यालयीय खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु सभी आर्य विद्यालयों के (P.E.T.) शारीरिक शिक्षकों की बैठक दिनांक 11 अगस्त 2015 (मंगलवार) को प्रातः 9.30 बजे एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल में आयोजित की गई है। **-सुरेन्द्र रैली**

आगामी अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताएं

आशुभाषण प्रतियोगिता	12/08/2015 (बुधवार)	दयानन्द आदर्श विद्यालय आर्य समाज, तिलक नगर, दिल्ली
भाषण प्रतियोगिता	18/08/2015 (मंगलवार)	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल आर्य समाज सरोजिनी नगर दिल्ली
नुक्कड़ नाटक	27/08/2015 (वीरवार)	लालीबाई बाल विद्यालय आर्य समाज, गोविन्द भवन, दयानन्द वाटिका राम बाग, नई दिल्ली-07

सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

बोध कथा

सत्संग का प्रभाव

कुछ देर की अच्छी संगत भी क्या परिणाम देती है, यह अमर शहीद आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम जी के जीवन से ज्ञात होता है। आर्य समाज के ये महान् विद्वान नेता ग्राम-ग्राम में घूमकर प्रचार कर रहे थे। एक ग्राम में पहुंचे तो उस प्रदेश का डाकू मुगला भी उनके व्याख्यान को सुनने के लिए आ गया। इसके कई साथी भी दूसरे लोगों के साथ बैठ गए। ग्राम के लोगों ने जब मुगला को देखा और पहचाना तो उनके पैरों के नीचे से जमीन निकल गई। एक-एक करके वे उठने लगे। पण्डित लेखराम जी व्याख्यान दे रहे थे। लोग उठकर जा रहे थे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि यह क्या हो रहा है! धीरे-धीरे सभी लोग चले गए। केवल मुगला और उनके साथी रह गए। पण्डित लेखराम जी भाषण देते रहे। वे कर्म के सम्बन्ध में बोल रहे थे और बता रहे थे कि- 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।' अर्थात् ''जो भी शुभ या अशुभ कर्म तुमने किये हैं, उनका फल भोगना पड़ेगा अवश्य। कर्म के फल से बचने का कोई मार्ग नहीं। दूसरे लोग न देखें, पुलिस न देखे, सरकार न देखे, परन्तु याद रखो कि एक आँख ऐसी है जो तुम्हें हर समय देख रही है। तुम्हारे हृदय के भीतर जो कुछ होता है, उसे भी वह जानती है। उससे बचने का कोई मार्ग नहीं। प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्म का फल वह देती है।''

व्याख्यान समाप्त हुआ तो मुगला ने पण्डित लेखराम जी के पास जाकर कहा-'आप कौन हैं?'

पण्डित जी ने कहा - 'मैं लेखराम हूं।'

डाकू ने कहा -'मैं एकान्त में आपसे कुछ बातें पूछना चाहता हूं। क्या आपसे मिल सकता हूं?'

लेखराम जी ने कहा - 'अवश्य मिल सकते हो। मैं आर्य समाज में ठहरा हुआ हूं, वहीं आ जाना।'

रा़ि के समय मुगला और उसके साथी आर्य समाज के मकान में जा पहुंचे। ग्राम वालों ने समझा कि आपत्ति आ गई है, ये लोग बेचारे पण्डित जी को लूटने आए हैं।

परन्तु मुगला ने हाथ जोड़कर पण्डित जी से कहा - 'आप तो कह रहे थे कि प्रत्येक कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है, तो क्या यह ठीक है?'

पण्डित जी ने कहा - 'शत-प्रतिशत ठीक है।'

मुगला बोला - 'क्या प्रत्येक कर्म का फल भोगना पड़ेगा? क्या बचने का कोई उपाय नहीं?'

पण्डित जी ने कहा - 'कोई नहीं।'

मुगला ने कहा - 'तो फिर क्या बनेगा? मैं तो कई वर्ष से डाके मारता हूं।'

पण्डित जी ने कहा - 'आज से छोड़ दो। कल आर्य समाज में आओ, मैं तुम्हें यज्ञोपवीत दूंगा। इसके पश्चात् धर्म के मार्ग पर चलो।'

मुगला और उसके साथी दूसरे दिन आर्य समाज में पहुंच गए।

सबका जीवन बदल गया।

यह होता है - सत्संग का प्रभाव!

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध। तुलसी संगत साधु की, कटै कोटि अपराध।।

पोर्न बेवसाइटों पर पूर्ण प्रतिबन्ध हो

हाल ही में प्रधानमंत्री जी द्वारा पोर्न वेबसाइटों पर लगाया गया प्रतिबंध भारत के ही एक सामाजिक धड़े को नागवार गुजरा। सोशल मीडिया व कुछ इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के लोगों द्वारा किसी सरकार के फैसले का इतना विरोध पहले कभी नहीं हुआ ''इस विरोध को क्या समझें यही कि विदेशी चलचित्रों के माध्यम से कामुकता के इस जहर का वो समाज आदी हो चुका है?''

आखिर इस विरोध का औचित्य क्या था? यदि भारतीय मीडिया और आज का युवा, सरकार के इस फैसले का स्वागत करता तो शायद आने वाला बचपन इस जहर से बच जाता किन्तु भारतीय मीडिया ने इस मामले में अपनी कोई महत्व पूर्ण भूमिका नहीं निभाई। सरकार अपने फैसले से हट गई अब सरकार एक बार फिर इस फैसले पर विचार करे और देश में जनमत सग्रंह कराये यदि कुछ हजार/लाख लोग इस फैसले के खिलाफ हैं तो वहीं करोड़ो लोग इस फैसले के पक्ष में भी हैं। अच्छे कार्यो का विरोध तो कुछ भारतीयों की आदत बन चुकी है, याकूब मेनन की फांसी के ही खिलाफ कितने लोग उतर आये थे। जब केन्द्रीय विद्यालयों से जर्मन भाषा हटवाई गयी तब भी लोगों ने विरोध किया था। चाहे हिन्दी को राष्ट्र भाषा का दर्जा देने की बात हो या संस्कृत भाषा की समृद्धि की बात हो लोगों को विरोध करने से परहेज नहीं होता। दरअसल ये लोग देश, संस्कृति और हमारी सभ्यता के दुश्मन है। सरकार इन लोगों के शोर को नजरअंदाज करे।

हमारी सरकार से आशा है कि वो अपने फैसले पर मजबूती से डटी रहेगी। आर्य समाज सरकार के इस प्रतिबन्ध के फैसले के साथ है। सरकार इन लोगों को नजर अंदाज कर इस कानून को तत्काल प्रभावी करे ताकि आने वाला भारत का सुनहरा बचपन इस जहर से बच सके।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिडनी, आस्ट्रेलिया 2015

दिनांक 27, 28 व 29 नवम्बर 2015

आस्ट्रेलिया आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए, यात्रा विवरण व आवेदन पत्र हमारी बेवसाइट

www.thearyasamaj.org/download से डाउनलोड करें। शीघ्र आवेदन करें। स्थान सीमित है।

हैहय क्षत्रिय स्वजातीय मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए ट्रस्ट की

अष्टम् पुरस्कार योजना

शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट,अलवर जिले की हैहय क्षत्रिय स्वजातीय मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए ट्रस्ट की अष्टम् पुरस्कार योजना के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की सैकेन्ड्री परीक्षा 2014-15 में 65 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त व कक्षा 10 में 71 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी इस योजना के पात्र हैं।

विद्यार्थी अपनी सैकण्ड्री परीक्षा 2014-15 की अंक तालिका की सत्यापित छाया प्रति व पत्र व्यवहार-पता एवं मोबाईल नं. ट्रस्ट कार्यालय में दिनांक 31 अगस्त 2015 तक भेज दें।

- अशोक कुमार आर्य, मो. 09413304495, 0144-2337232

परम मित्र वैदिक गुरुकुल खांडा खेड़ी द्वारा आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर सम्पन

परम मित्र वैदिक गुरुकुल खांडा खेड़ी (हिसार) में 25 से 30 जून तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। गुरुकुल के प्राचार्य आचार्य राजकिशोर शास्त्री और परम मित्र विद्या निकेतन के प्राचार्य देवेन्द्र के कुशल मार्ग दर्शन में यह शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर में अनेक गांवों से लगभग 100 आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में आत्मिक विकास के लिए प्रतिदिन संध्या हवन का कार्यक्रम हुआ साथ ही भारतीय संस्कृति, इतिहास और आदर्शो के बारे में भी बतलाया गया व विभिन्न विद्वानों के प्रवचन/उपदेश से आर्य वीरों ने बौद्धिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। भारतीय जनता पार्टी के नारनौंद हल्का प्रभारी श्री अजय सिंधु ने भी शिविर का दौरा कर आर्यवीरों का उत्साह बढ़ाया।-**यज्ञवीर आर्य, मण्डलपति**

18वां भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

दिनांक 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2015 18वें भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के पावन अवसर पर दिनांक 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2015 को विश्वभर के भाई-बहन आमंत्रित है। आप, अनेकानेक संन्यासीवृन्द, वेद-प्रवक्ताओं व आर्य नेतृत्व की उपस्थिति से शोभायमान इस महोत्सव में पधारने हेतु अभी से अपना मानस बना, आरक्षण आदि करा लें व हमें सूचित करें।

निवेदक - श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

दूरभाष: 0294-2417694, 09829063110

आर्य समाज राम नगर, रुड़की के तत्त्वावधान में

बाल गंगाधर तिलक व शहीद चन्द्र शेखर आजाद का जन्मोत्सव सम्पन्न

महान स्वतंत्रता सेनानी, देश भक्त लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक व शहीद चन्द्र शेखर आजाद का जन्म दिवस आर्य समाज रामनगर, रुड़की ने स्वास्तिक यज्ञ द्वारा मनाया गया। कार्यक्रम में श्री मदन लाल शर्मा, ज्ञान सिंह सैनी, श्रीमती आभा शर्मा, श्री वी.के. सिंघल, श्री विवेक अरोड़ा, श्री वेद प्रकाश, श्री जे.डी. त्यागी, श्री रतन सिंह, श्री महावीर सिंह, श्री विजय हाण्डा, श्री विशाल आर्य आदि उपस्थिति थे।

आर्यजन अफवाहों से सावधान रहें

आचार्य बलदेव जी एवं श्री प्रकाश आर्य जी ही हैं सार्वदेशिक सभा के प्रधान एवं मन्त्री

'आर्यनीति' पत्रिका के 25 जुलाई, 2015 के अंक में "कैप्टन पक्ष के प्रकाश आर्य को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पद से हटाया" प्रकाशित किया गया है, जिससे आर्यजगत् में भ्रम की स्थित उत्पन्न करके श्री आनन्द कुमार आर्य (निष्कासित उप प्रधान, सार्वदेशिक सभा) ने संगठन को तोड़ने और कमजोर करने का प्रयास किया है। इस सम्बन्ध में समस्त आर्य जगत भ्रम से सावधान रहे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै. देवरत्न आर्य जी के देहावसान के बाद सभा की अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 24 जुलाई, 2012 में आचार्य बलदेव जी को सर्वसम्मति से विधिवत् प्रधान मनोनीत/निर्वाचित किया गया था, आगामी अन्तरंग सभा बैठक 16 सितम्बर, 2012 जिसमें श्री आनन्द कुमार आर्य भी उपस्थित थे, आचार्य बलदेव जी को सर्वसम्मति से पुन: प्रधान मनोनीत किया गया। आचार्य बलदेव जी ने उन्हें कभी कार्यकारी प्रधान के रूप में मनोनीत नहीं किया, वे उप प्रधान ही रहे।

बावजूद इसके श्री आनन्द कुमार आर्य, अपने आपको कार्यकारी प्रधान बताते हुए अवैध रूप से कार्य करने में संलग्न रहे। सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री प्रकाश आर्य जी ने उन्हें कई पत्र लिखे, अनेक नोटिस दिए कि आप अनैतिक एवं अवैध कार्य न करें, सार्वदेशिक सभा में "कार्यकारी प्रधान" का कोई संवैधानिक पद नहीं है। किन्तु श्री आनन्द कुमार आर्य अपने निजी स्वार्थों के कारण अपने आपको कार्यकारी प्रधान लिखकर असंवैधानिक कार्यों में संलग्न रहे।

ज्ञातव्य है कि किसी भी नियमावली के अनुसार सभा को भंग करने या तदर्थ समिति बनाने का अधिकार केवल सभा प्रधान को ही है, अन्य किसी को नहीं। इससे पूर्व में भी कार्यकारी प्रधान (व. उप प्रधान) द्वारा की गई इस प्रकार की कार्यवाहियों को सभा प्रधान ने निरस्त किया है।

श्री आनन्द कुमार आर्य जी की इन्हीं संगठन विरोधी गतिविधियों, आर्य समाज के नियम उपनियम तथा संगठन की उपेक्षा करने के कारण उन्हें सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 27/4/2014 लिए गए निर्णय के आधार पर कार्यवाही करते हुए दिनांक 20 सितम्बर, 2014 को सभा प्रधान आचार्य बलदेव जी ने अन्तत: श्री आनन्द कुमार आर्य को सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान पद से भी निलम्बित कर दिया।

श्री आनन्द कुमार आर्य अब सार्वदेशिक सभा के किसी भी पद पर नहीं है किन्तु वे अब भी अपने आपको सार्वदेशिक सभा का कार्यकारी प्रधान बता कर जन सामान्य को धोखा दे रहे है तथा आर्य समाज के संगठन को क्षति पहुंचा रहे हैं, आर्य जनता उनसे सावधान रहे।

अत: आर्यनीति में प्रकाशित यह सूचना पूर्णतया असत्य, गलत, झूठ अवैध एवं आर्यजनता को भ्रमित करने के लिए प्रकाशित की गई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस सूचना का पूरी तरह से खण्डन करती है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आचार्य बलदेव जी के प्रधानत्व एवं श्री प्रकाश आर्य जी के मन्त्रीत्व में निरन्तर देश एवं विदेश में वेद प्रचार का कार्य कर रही है एवं प्रतिवर्ष अनेक योजनाओं का संचालन एवं देश-विदेश में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों का आयोजन कर रही है।

- आर्य सुरेश चन्द्र अग्रवाल
उप प्रधान, सार्वदेशिक सभा
मो. 09824072509

पाखंड और अन्धविश्वास देश को फिर गुलाम बनाएगा!

आर्य संदेश के अंक 36 के प्रथम पृष्ठ पर श्री राजीव चौधरी द्वारा लिखित ज्वलंत लेख 'अशिक्षा, अंधविश्वास और आधुनिक भारत' पर आप सभी प्रबुद्ध पाठकों की काफी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं। कुछ प्रबुद्ध पाठकों ने श्री सुरेन्द्र रैली जी द्वारा रचित इसी विषय पर आधारित पुस्तिका को पढ़ने की जिज्ञासा प्रकट की है। आपकी जिज्ञासा को देखते हुए आर्य संदेश के इस अंक में श्री रैली की पुस्तिका 'यह पाखंड और अन्धविश्वास देश को फिर गुलाम बनाएगा !' को क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। ***-सम्पादक***

यदि हम भारत के इतिहास को ध्यान पूर्वक देखें तो पता चलता है, कि हिन्दू धर्म में फैले पाखंड और अन्धविश्वास ने इसे सबसे अधिक नुकसान पहुँचाया है। इतिहासकार लिखते है कि जब महमूद गजनी सोमनाथ के मंदिर को लूट रहा था, लोगों की सरेआम हत्या कर रहा था, उस समय मंदिर के चारों ओर हजारों लोग जमा थे, जो ईश्वर से केवल प्रार्थना कर रहे थे कि भगवान अवतरित हो जाओ और इन आततायियों से हमें और अपने आपको (मूर्तियों में बैठे भगवान) को बचा लो । महमूद गजनी' अपने इतिहासकार अलब्रूनी को स्वयं कहता है कि उसने इतने अन्धविश्वासी और मूर्ख लोग संसार में कहीं नहीं देखे जो पत्थर की मूर्तियों पर अटूट विश्वास रखते थे कि वह एकदम जीवंत हो जाएँगी और उनकी रक्षा करेगी । उसका कहना था कि यदि वहाँ खड़े और प्रार्थना करते लोग केवल एक-एक पत्थर उठाकर भी उसके मुट्ठीभर सैनिकों को मारते तो उनके पैर उखड़ जाते । लेकिन उनके अन्धविश्वास ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया ।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने इस बात को समझा कि भारत की गुलामी की जड़ में मूर्ति-पूजा का यही पाखंड और अन्धविश्वास है, जो इसको कमजोर और आत्मविश्वास रहित बनाता है । उन्होंने मूर्ति पूजा के भयानक नतीजे को देखते हुए ही घोर विपत्तियां सह कर इसका विरोध किया और मूर्ति पूजा का खंडन किया था। आर्य समाज की स्थापना केवल इसी उद्देश्य से की गई थी और प्रत्येक आर्यसमाजी को निर्देश दिया था कि वह विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश करे।

आज फिर उन ताकतों ने सिर उठा लिया है जो मूर्ति-पूजा के बहाने अन्धविश्वास और पाखंड को भारत में फैला रहे हैं। हमारी

गुलामी और गरीबी के लिए यह तर्कहीन और बौद्धिकता विहीन मूर्ति-पूजा ही है जो हमें कमजोर बनाती है और हमारे गौरव को चोट पहुँचाती है।

21 सितम्बर 1995 वर्तमान इतिहास का वह काला दिन है जब एक बार फिर पाखंड और अन्धविश्वास की ताकतों ने भारत में अपना पूरा षड़यन्त्र रचा और दूर संचार व्यवस्था का लाभ उठाते हुए इस खबर को देश-विदेश में जमकर प्रसारित किया कि भगवान गणेश की मूर्ति आज दुग्धपान कर रही है । इस अफवाह का सूत्रपात कहाँ से हुआ, यह आज तक किसी ने जानने की कोशिश नहीं की । बस, लाखों-करोड़ों लोग मंदिरों की ओर दौड़ पड़े और देखते ही देखते गणेश की मूर्ति को दुग्ध पिलाने के लिए लम्बी कतारें पूरे भारत वर्ष में लग गई। गणेश जी सचमुच दूध पी रहे हैं, ऐसा मानने वालों की संख्या उस दिन करोड़ों में थी ।

हालांकि शाम होने तक वैज्ञानिकों ने वास्तविकता सामने रख दी थी लेकिन इस को सच मानने वालों में कमी नहीं आई। हैरानी की बात यह है कि इस पाखंड को मानने वाले अनपढ़, देहाती व गँवार नहीं, बल्कि पढ़े-लिखे मध्यम व उच्च वर्ग के लोग ज्यादा हैं जो अन्य लोगों के लिए आदर्श नायक होते हैं। जो विज्ञान और उसके आधार सिद्धान्तों को जानते और मानते हैं। इस पाखंड ने तर्क, विवेक और समझदारी की दीवार को पूरी तरह से गिरा दिया । इसलिए हम मानते हैं कि यह देश के लिए अशुभ संकेत है कि इतनी बड़ी जनसंख्या को कुछ लोगों ने बेवकूफ बना दिया जिससे नई पीढ़ी के मानस पर बुरा प्रभाव पड़ा है। उस समय हमने भारत सरकार से मांग की थी कि वह इस पाखंड को फैलाने वालों की जानकारी हासिल करे कि वह कौन लोग हैं जिन्होंने इस अफवाह को फैलाया, यह किन देशद्रोही धूर्तो की सोची समझी चाल है, इस बात की जांच देश की सर्वोत्तम जांच ऐजेन्सी से करवानी चाहिए ताकि सच्चाई का पता लग सके और ऐसे समाज व देश के दुश्मनों को सख्त सजा मिल सके । पर दुर्भाग्यवश सरकार ने कुछ नही किया और अंधविश्वास और पाखंड के नए-नए तरीके निकाल कर लोगों को गुमराह किया जा रहा है।

चमत्कार कुछ नहीं केवल छलावा है

इस देश में ऐसे मूर्खो की कमी नहीं है जो चमत्कारों में विश्वास रखते हैं । विशेषकर उन चमत्कारों में जिसको साधारण बुद्धि

भी मानने से इन्कार कर दे । आम कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति भले इन बेतुके पाखंड भरे चमत्कारों को नकार दे, लेकिन पढ़े-लिखे, बड़े-बड़े नौकरशाह, नामी गरामी धनपति एवं दिग्गज राजनैतिक नेता तक इन अन्धविश्वासों के मोह पाश में जकड़े हुए हैं ।

नि:संदेह यह लोग ही पाखंड, आडंबर, अन्धविश्वास और अवैज्ञानिक चमत्कारों को संरक्षण देते हैं जो पूरे समाज व देश को अविवेक की ओर धकेलता है। जब गणेश की मूर्ति को दूध पिलाने का पाखंड किया जा रहा था, उस समय यह लोग बढ़ चढ़कर इसे प्रचारित व प्रसारित कर रहे थे। चन्द्रमा की धरती पर आदमी का उतरना या मंगल ग्रह से वहाँ के चित्र लाना, जेब में रखे एक छोटे से टेलीफोन के यन्त्र के माध्यम से दुनिया भर में सीधे लाईव चित्रों सहित बात कर सकना या फिर टेलिविजन के माध्यम से हजारों मील दूर पर घटनाओं का सीधा प्रसारण तुरंत उसी वक्त देखना, इन्टरनेट, वाट्सऐप, ई-मेल इत्यादि इन्हें चमत्कार नहीं लगता लेकिन पत्थर की मूर्ति द्वारा दूध पीना इन्हें आश्चर्य चकित कर रहा था जबकि यह खुले आम पाखंड हो रहा था और मूर्ति दूध नहीं पी रही थी । लेकिन फिर भी यह लोगों के मन में बुद्धि-भ्रम पैदा कर रहे थे जैसे एक जादूगर करता है। इन षड्यन्त्रकारियों का केवल एक ही उद्देय था कि आम आदमी मूर्ति पूजा में विश्वास करे और मन्दिरों को दान दे ताकि वह भव्य बने और 21वीं सदी में कोई नया महमूद गजनी इनको लूटने के लिए लालायित हो। वैसे जिन्होंने दूध पिला दिया, उन्हें क्या मिला और जिन्होंने दूध नहीं पिलाया उन्होंने क्या खोया । बस इतना हुआ कि मंदिरों के पुजारियों को खूब चढ़ावा मिला, मंदिरों में जाने वालों की संख्या बढ़ गई और दूध बेचने वालों ने कच्ची लस्सी दूध के भाव बेचकर पैसा कमाया। लेकिन नुकसान कितना हुआ, उसका अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि न केवल बच्चों के मुख से लाखों टन दूध छीन कर नाली में बहा दिया गया बल्कि करोड़ों दिलों में पाखंड और अन्धविश्वास को जमा दिया कि मूर्ति दूध पीती हैं अत: वह पाषाण नहीं अपितु जिन्दा हैं, ईश्वर उसमें निवास करता है और उस मूर्ति की कृपा से कुछ भी पाया जा सकता है।

ऐसा अंधविश्वास किसी भी समाज को कमजोर बनाता है। उसे आत्मविश्वास से वंचित करता है। उसके सोचने और विवेक की शक्ति को मंद करता है। ऐसा समाज यथार्थ पर नहीं, अनहोनी और अफवाहों को सहज ही विश्वसनीय मानने लगता है। यह स्थिति हिन्दू समाज के लिए बेहद घातक है । अगर अफवाहों की चपेट में आने की भारतीय समाज की संवेदनशीलता इतनी गहरी है तो कल को इस समाज का कोई भी शत्रु सहजता से इसका लाभ उठा सकता है। जो समाज सिर्फ अफवाह के आधार पर कश्मीर से कन्याकुमारी तक अपनी दिनचर्या बदल डाले, उसे किसी भी समझदार शत्रु द्वारा सहज ही पराजय और पतन के गर्त में धकेल कर ध्वस्त किया जा सकता है। यानि हम अंधविश्वासों और चमत्कारों पर विश्वास करते रहें और किसी भी क्षण औंधे मुँह गिरने को तैयार रहें ।

आज फिर हिन्दू समाज को विवेकपूर्ण चेतना की आवश्यकता है। जो लोग पाखंड और अन्धविश्वास फैला रहे हैं, वह समाज के सबसे बड़े शत्रु हैं, जिनकी पहचान होनी चाहिए और उन्हें कठोर दंड देना चाहिए। **क्रमशः**

-सुरेन्द्र कुमार रैली

आर्य दैनन्दिनी- 2016 हेतु
विशेष सूचना

आर्य प्रकाशन हर वर्ष की भांति आर्य दैनन्दिनी (डायरी) का प्रकाशन कर रहा है जिसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नम्बर, मोबाईल नं., सहित प्रकाशित किये जाते हैं। अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व अपना पता भेजें, जिससे कि सही नम्बर प्रकाशित हो सके। यदि किसी महानुभाव का मोबाईल नं., दूरभाष नं. व पता बदल गया हो तो वे हमें 25 सितम्बर 2015 तक डाक, एस,एम,एस, अथवा ईमेल aryaprakashan@gmail.com पर भेजने की कृपा करें, ताकि उसे भली प्रकार आर्य दैनन्दिनी में प्रकाशित किया जा सके।

-संजीव आर्य (प्रबन्धक)
आर्य प्रकाशन, 814 कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-110006
मो. 09868244958

आर्य समाज का इतिहास

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिल्ली के समस्त 'आर्य समाज का इतिहास' संकलन प्रकाशित किया जाना है। अत: दिल्ली के सभी आर्य समाजों के प्रमुख अधिकारी अपने-अपने आर्य समाजों का इतिहास (जो भेज चुके हैं उन्हें छोड़कर) भेजें जिसके अंतर्गत-आर्य समाज की स्थापना कब और कैसे हुई, स्थापना के समय की परिस्थितियां क्या थीं, किन-किन महानुभावों ने आर्य समाज स्थापना में अपनी अहम भूमिका निभाई, उनके नाम, स्थापना के समय किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा, व वर्तमान में क्या स्थिति है समाज में कौन-कौन सी गतिविधियां चल रही हैं, समाज में कौन-कौन से कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं, व वर्तमान में कौन-कौन से अधिकारीगण आर्य समाज को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, उनके नाम, फोटो एवं आर्य समाज भवन के प्रमुख फोटो जल्द से जल्द दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर या सभा की ई-मेल आई.डी. aryasabha@yahoo.com पर प्रेषित करें। **-सम्पादक**

पृष्ठ 1 का शेष

जीव, प्रकृति के लक्षण तथा उनके परस्पर सम्बन्धों से है। इस दृष्टिकोण के विभिन्न निरूपण के आधार पर धर्म का स्वरूप त्रैतवाद, द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैत आदि के रूप में दिग्दर्शित होता है।

क्रियात्मक दृष्टिकोण को, नैतिक रूप भी कहा जा सकता है।

'धार्यते य: स: धर्म: अर्थात् आचरण और व्यवहार में जिसे धारण किया जाए वही धर्म है। महाभारत के कर्ण पर्व में 58/69 श्लोक में कहा गया है, ''धारणाद्धर्यभिव्याहु धर्मोधारयते प्रजा यस्माद्धरण संयुक्त: स: धर्म इति निश्चय:।'' अर्थात् धारण करने के कारण धर्म नाम है। धर्म प्रज्ञाओं का धारण करता है, जिससे लोक का धारण हो, लोक की स्थिति हो, वही निश्चय रूप में धर्म है। महाभारत में महात्मा विदुर ने कहा कि अनेक शास्त्रों का अनुशीलन, त्याग, तपस्या, श्रद्धा, यज्ञ-क्रिया भाव-शुद्धि, दया, सत्य व संयम धर्म के मूल तत्त्व हैं। महाभारत के अनुशासन पर्व के 2/40 श्लोक में भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को कहा कि 'अहिंसा, सत्य, अक्रोध तथा दान' ये चार सनातन धर्म हैं।

मनु स्मृति के 62/6 श्लोक में धर्म के निम्नलिखित लक्ष्ण बताए हैं-

घृति:क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह:। धीर्विद्या सत्यम क्रोधो दशकं धर्म लक्ष्णम्।। अर्थात्, धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी-त्याग, शुचिता, इन्द्रिय-निग्रह, आलस्य व प्रमाद-त्याग विद्या, सत्य और अक्रोध-धर्म के दस लक्षण हैं।

महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में धर्म की सर्वाधिक व्यापक व सटीक परिभाषा की है, जिसमें लोक व परलोक दोनों के विषय सम्मिलित हैं:- ''यतोऽन्यमुद्यनि: श्रेयस सिद्धि'' अर्थात् जिस से लौकिक सुख व ऐश्वर्य की और मोक्ष सम्बन्धी परलोक की सिद्धि हो, वही धर्म है। धर्मराज युधिष्ठिर ने माहभारत के वन पर्व के श्लोक 313/128 में धर्म की महत्ता दिग्दर्शित करते हुए कहा है कि -

''धर्म एव हतोहन्ति, धर्मो रक्षति रक्षत:। तस्मात् धर्मो न हातन्यो मा नो धर्मो हतो वधीत।। अर्थात् जो धर्म का हनन करता हे, धर्म उसका हनन कर देता है। रक्षा किया हुआ धर्म, धर्म रक्षक की रक्षा करता है। इसलिए धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए कि कहीं वह निहत होकर हमारा नाश न कर दे।

अर्थ (धन):-आज का भौतिकवादी युग अर्थ-प्रधान है। भर्तृहरि शतक में तो कहा गया है कि ''सर्वेगुण: कांचना मसन्ति'' अर्थात् कंचन में सभी गुण हैं। महाभारत में कहा गया है कि 'अर्थस्य पुरुषो दास:, दासस्त्वर्थो न कस्यथित' अर्थात् मनुष्य अर्थ का दास है किन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है। वस्तुत: जीवन में अर्थ का सर्वाधिक महत्व हो गया है, मानो अर्थ ही जीवन का आदि और अन्त हो। महाभारत के उद्योग पर्व में युधिष्ठिर ने कहा है कि धन को ही जीवन का परम धन कहा गया है।धन में सब कुछ प्रतिष्ठित है। संसार में वे लोग ही वास्तविक जीवन जीते हैं, जिनके पास धन है। धन हीन लोग तो मृतक के समान हैं। हम लोगों को लक्ष्मी का परित्याग करना किसी भी प्रकार से न्याय युक्त नहीं है, उसके लिए प्रयत्न करते हुए हम मारे भी जाएं तो अच्छा होगा।

सभी आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को इसलिए श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि गृहस्थी धनोपार्जन करके सभी आश्रमों का भरण-पोषण करता है। आज सम्पूर्ण राजनीतिक दर्शन अर्थ पर ही अवलम्बित है, जिसके एक नये विषय राजनीति शास्त्र को सर्वाधिक महत्व प्राप्त है। महाभारत के शान्ति पर्व के अध्याय 8 में नहुष कहते हैं कि धन से ही सब शुभ कार्यो का अनुष्ठान होता है। धन से ही धर्म, काम और स्वर्ग की सिद्धि होती है। धन के बिना प्राण-यात्रा भी सिद्ध नहीं हो सकती। निर्धन व्यक्ति की सभी क्रियाएं विछिन्न हो जाती हैं।

वैदिक संस्कृति में प्रावधान किया गया है कि धर्म पूर्वक अर्थोपार्जन करना चाहिए अर्थात् शुद्ध, पवित्र और वैध साधनों से अर्थोपार्जन करना चाहिए। शोषण, कर-वंचना, डाका, चोरी, रंगदारी, मिलावट एवं छल-कपट से प्राप्त किया गया धन नरक के द्वार खोल देता है। हमारी संस्कृति में अर्थोपार्जन करना आवश्यक तो समझा गया है किन्तु लोभ-लालच के वशीभूत होकर धन का अनावश्यक भंडार करना अवांछित व अनैतिक समझा गया है। धन उतना ही कमाना चाहिए जिससे परिवार व समाज की आवश्यकताएं पूर्ण हो सकें। अधिक सम्पत्ति से भोग बढ़ता है, भोग से विलासिता बढ़ती है और विलासिता से लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, मोह, रोग संघर्ष एवं तनाव की सृष्टि होती है, जिससे जीवन में सुख, शान्ति, सौहार्द तथा पवित्रता नष्ट हो जाती है।

पुरुषार्थ चतुष्टय ...

महाभारत के उद्योग पर्व के श्लोक 36-40 में महात्मा विदुर कहते हैं कि जो मनुष्य धन, वैभव व ऐश्वर्य चाहता है, उसे निम्नलिखित 6 दोषों का परित्याग कर देना चाहिए- निद्रा, तन्द्रा, आलस्य, भय, क्रोध, दीघ्रसूत्रता।

काम :- आवेगों से कर्मो का बन्धन चलता है। आवेग ही कर्मचक्र के मूल स्रोत हैं। 'काम' का आवेग अत्यन्त प्रचण्ड व दुर्दमनीय होता है। प्रसिद्ध मनोविज्ञान शास्त्री श्री मैग्डगल के मतानुसार प्रत्येक मनुष्य में 14 जन्मजात मूल प्रवृत्तियां होती हैं, जिनमें काम की मूल प्रवृत्ति प्रधान मूल प्रवृत्ति कहलाती है। अत: 'काम' की प्रवृत्ति का अपने मूल रूप में प्रयोग अत्यन्त विनाश व व्यभिचार को जन्म देता है। अत: 'काम' की इस प्रबल मूल प्रवृत्ति का निर्मलीकरण अत्यन्त आवश्यक है। वैदिक संस्कृति में इसका निदान ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन है।

हमारी संस्कृति में 'काम' को भी जीवन का आवश्यक अंग माना गया है। अथर्ववेद में लिखा है, ''कामो जज्ञे प्रथमंनैनं देवा आयु: पितरो न मर्त्या: ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महान् तस्मै ते कामलम इत्कृणोमि। अर्थात् काम सर्व प्रथम उत्पन्न हुआ। देव, पितर, मनुष्य कोई इसका पार नहीं पा सका। यह संसार में मनुष्य का सबसे बड़ा और सर्वाधिक बलशाली शत्रु है। यह नाश करने वाला है, हे काम! मैं तुझे नमस्कार करता हूं।

अनियंत्रित काम भोग-विलास को जन्म देता है, जिससे व्यभिचार व बलात्कार का बोलवाला हो जाता है। समाज में विलासिता और वर्ण संकटता की वृद्धि हो जाती है। आज अश्लील-विज्ञापन, संवाद, अभिनय, दृष्य व अश्लील संगीत, अर्धनग्न पहनावा तथा तामसी भोजन एवं मद्यपान आदि कुप्रवृत्तियां कामुकता को जन्म देती हैं एवं तीव्र वासना को जाग्रत करती है। ऐसे कामुकता-प्रधान वातावरण में मन में संयम और इन्द्रिय निग्रह अत्यन्त कठिन है। मनुस्मृति में ठीक ही कहा गया है कि ''न जातु काम: कामानामुष भोगेन शान्यति हविषा कृष्ण वर्त्येव भूय एवाभिवर्धते।'' अर्थात् कामनाओं को निरन्तर जगाने से कामनाओं का शमन नहीं होता। जिस प्रकार घी की आहूति से अग्नि प्रचन्डतर होती जाती है, उसी प्रकार निरन्तर भोग-विलास से काम भावना अत्यन्त प्रचन्ड होती जाती है और कामी मनुष्य शक्तिहीन, अकर्मण्य एवं निन्दनीय बन जाता है।

काम का मूल उद्देश्य सन्तानोत्पति है। संयम द्वारा काम को जीत कर गृहस्थ भी ब्रह्मचारी रह सकता है। ब्रह्मचर्य, सत्संग व स्वाध्याय काम को नियंत्रित करने के प्रमुख साधन है।

मोक्ष :- मानव जीवन का अन्तिम व मुख्य लक्ष्य मोक्ष है अर्थात् जीवन-मरण के दु:खों से मुक्ति पाकर ईश्वर को प्राप्त करना। मानव योनि सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि अन्य सभी योनियां केवल भोग योनियां हैं, जबकि मनुष्य योनि कर्मयोनि और भोगयोनि दोनों हैं। जीवात्मा 'सत' व 'चित्' अर्थात् अस्तित्वान तथा चेतन है और ईश्वर- सत्+चित्+=आनन्द= सच्चिदानन्द है। ईश्वरीय आनन्द को प्राप्त करने के लिए मनुष्य मोक्ष की कामना करता है। जीवन में रहते हुए अर्थ तथा काम से मुक्ति भी मोक्ष की कोटि में आती है।

सृष्टि में विकास की दिशा प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर, प्रेय से श्रेय की ओर तथा भोग से त्याग की ओर है।

इसी धारणा को व्यक्त करने के लिए धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की परिकल्पना की गई है। अर्थ व काम प्रवृत्ति सूचक है, जिसे 'अभ्युदय' कहा जाता है और धर्म निवृत्ति सूचक है, इसी को 'निश्रेयस' कहा जाता है।अत: धर्म युक्त काम व अर्थ मोक्ष की ओर ले जाते हैं। मोक्षार्थी को चाहिए कि वह ईश्वर-उपासना, स्वाध्याय, सत्संग, सद्गुण एवं सदाचरण अपनाए। ईश्वर की उपासना के लिए एकान्त स्थान में बैठकर मन को शुद्ध कर आत्मा को स्थिर करके एवं सम्यक चिन्तन द्वारा सच्चिदानन्द प्रभु का ध्यान करना चाहिए। महर्षि पतंजलि के मतानुसार उपासना द्वारा चित्त की वृत्तियों को सांसारिक विषयों से हटाकर परमेश्वर का ध्यान करना ही योग है तथा योग के 8 साधनों- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारण, समाधि के द्वारा मोक्ष प्राप्त होता है।

-गौरी शंकर भारद्वाज,
पूर्व विधायक

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

दिनांक 6 से 8 मार्च 2016 श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा में प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन दिनांक 6 से 8 मार्च 2016 को किया आयेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियां अभी से अंकित कर लें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

-रामनाथ सहगल, मन्त्री

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

3 अगस्त से 9 अगस्त, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 6 अगस्त/ 7 अगस्त, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 5 अगस्त, 2015

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संस्कृत भाषा को स्मार्ट क्लास के माध्यम से पढ़ने-पढ़ाने की पहल

संस्कृत स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर का प्रदर्शन एवं बैठक सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली के सभी आर्य विद्यालयों में संस्कृत भाषा को स्मार्ट क्लास के माध्यम से सीखने-सिखाने की पहल की जा रही है। जल्द ही आर्य विद्यालयों में विद्यार्थी नवीनतम माध्यम से अपनी देव भाषा संस्कृत को सीख सकेंगे। इसी के सम्बन्ध में दिनांक 27 जुलाई 2015 को आर्य समाज पंजाबी बाग में संस्कृत को स्मार्ट क्लास के माध्यम से पढ़ाने के लिए एक बैठक का आयोजन किया गया। श्री सत्यानंद आर्य की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य विद्या परिषद दिल्ली के अधिकारी व विभिन्न आर्य विद्यालयों के अधिकारी प्रधानाचार्य व संस्कृत व हिन्दी भाषा पढ़ाने वाली अध्यापिकाएं उपस्थित थीं।

बैठक में संस्कृत भाषा के स्मार्ट क्लास के सॉफ्टवेयर का प्रदर्शन किया गया। इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से संस्कृत भाषा को रोचक बनाने का प्रयास किया गया है। इस सॉफ्टवेयर को बनाने वाली कम्पनी का दावा है कि विद्यार्थियों के लिए संस्कृत भाषा स्मार्ट क्लास के माध्यम से सीखना अत्यंत आसान व लाभकारी रहेगा और संस्कृत भाषा में विद्यार्थियों की रुचि बढ़ेगी।

बैठक में दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने संस्कृत भाषा की उपयोगिता के कई तथ्य रखे, उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष में भी प्रयोग होने वाली भाषा केवल और केवल संस्कृत ही है और किसी भी भाषा का अन्य भाषा में अनुवाद भी शतप्रतिशत शुद्ध एवं शीघ्रता से संस्कृत भाषा के माध्यम से ही संभव है।

श्री राजीव आर्य ने संस्कृत भाषा को भारतीय संस्कृति की पहचान बताते हुए कहा कि भविष्य में संस्कृत भाषा के माध्यम से ही प्रगति सम्भव है। आज के परिवेश में विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों व उत्तम संस्कारों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए संस्कृत भाषा को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को अनिवार्य बताते हुए श्री सुरेन्द्र रैली ने योग, यज्ञ व स्वाध्याय को जीवन के तीन अंगों के बारे में बताया। बैठक में उपस्थित सभी आर्य जनों ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के इस प्रयास की सराहना की। संस्कृत भाषा के इस नवीन सॉफ्टवेयर के सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए ई-मेल **aryasabha@yahoo.com** पर मेल भेज सकते हैं।

- आर्य विद्या परिषद

चुनाव समाचार

आर्य समाज रामनगर, रुड़की, जिला हरिद्वार

प्रधान - **श्रीमती ऊषा रानी आर्य**
मंत्री - **श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी**
कोषाध्यक्ष - **श्री जे.डी. त्यागी**

आर्य समाज मंदिर शकूर बस्ती, रानीबाग, दिल्ली

प्रधान - **श्री राज कुमार शर्मा**
मंत्री - **श्री मनोहर लाल तलूजा**
कोषाध्यक्ष - **श्रीमती रेखा शर्मा**

आर्य समाज पंखा रोड, सी ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली

प्रधान - **श्री शिव कुमार मदान**
मंत्री - **श्री अजय तनेजा**
कोषाध्यक्ष - **श्री विनय कुमार गुलाटी**

आवश्यकता है

आर्य समाज मंदिर, डेरावाल नगर, दिल्ली में वैदिक अनुष्ठान अनुसार यज्ञ और संस्कार करने में सक्षम एक बुद्धिमान, शिक्षित, सभ्य, कर्मठ और प्रगतिशील आवासीय पुरोहित की जरूरत है। सम्पर्क करें, रविवार को मंदिर में 8-9 सुबह या श्री खेम करण चुघ, संरक्षक, बी-208, डेरावाल नगर, दिल्ली-110009

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह